आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 08.01.2016) ■ अंक-397 ■ तारीख- 09 जनवरी 2016, पौष कृष्ण पक्ष - 14 ■ शनिवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया (पृष्ठ-1)

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)

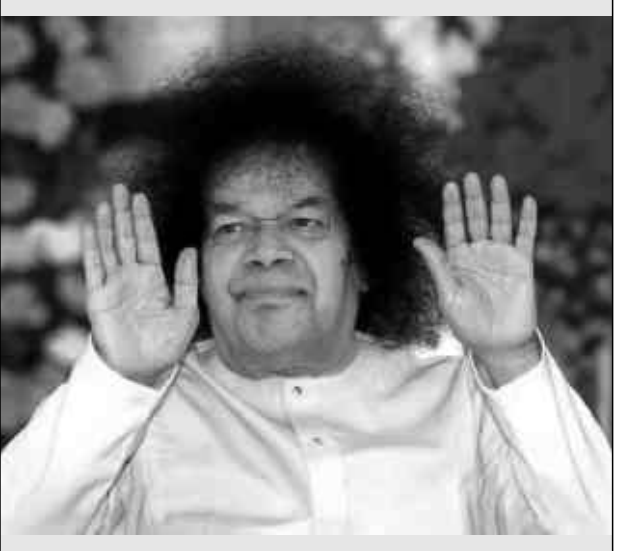

सद्गुणों का अपने में विकास करो, सत्कर्मों में सलग्न रहो, सदा सत्संग में रहो।

भारत में वैज्ञानिक शोध करना आसान बनाएंगे - पीएम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मैसूर में 103वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वैज्ञानिकों से कहा कि सरकार देश में वैज्ञानिक शोध करना आसान बनाएगी, साथ ही उनसे इंजीनियरिंग और शोध के केंद्र में अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, उर्जा, संवेदना और निष्पक्षता के पांच सिद्धांतों को रखने को कहा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगे कहा कि सहकारी संघवाद की पहल के तहत वह केंद्र और राज्य की संस्थाओं और एजेंसियों के बीच वृहद वैज्ञानिक सामंजस्य को प्रोत्साहित कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि हम भारत में विज्ञान और शोध को आसान बनाएंगे । नवोन्मेष केवल विज्ञान के लक्ष्य के लिए नहीं होने चाहिए, नवोन्मेष वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से संचालित होना चाहिए।

मैसूर विश्वविद्यालय के 'मनसा गंगोत्री' परिसर में प्रधानमंत्री 500 से अधिक वैज्ञानिकों और देश विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को संबोधित कर रहे थे. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों में वैश्विक स्तर पर भारत के आगे रहने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पांच 'ई' अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, उर्जा, संवेदना और निष्पक्षता को इंजीनियरिंग और शोध का केंद्र होने चाहिए. विज्ञान का प्रभाव सबसे अधिक तब होगा जब वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद इन पांच 'ई' के सिद्धांत का पालन करेंगे।

मोदी ने कहा कि आर्थिक वृद्धि, रोजगार के अवसर और समृद्धि के लिए शहर महत्वपूर्ण इंजन है. हमें तेजी से बढ़ते शहरीकरण की चुनौतियों से निपटना होगा. यह सतत विश्व के लिए महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि हमें स्थानीय पारिस्थितिकी और धरोहर को ध्यान में रखते हुए संवेदनशीलता के साथ योजना बनाकर शहरों का वैज्ञानिक रास्तों से विकास करना चाहिए।

सुविचार

- आयु बढ़ने से या दुर्घटना से सुन्दरता नष्ट हो सकती है पर आत्मिक सुन्दरता कभी नष्ट नहीं होती है।
- आज समाज, राष्ट्र व विश्व की सबसे जटिल समस्याओं का एक मात्र हल है चरित्र निर्माण। चरित्र बिगड़ जाने पर कोई प्रतिष्ठा बाकी नहीं रहती।
- जब आप क्रोधित होते है तो आपकी सारी शक्ति नष्ट हो जाती है, अतः शक्ति का प्रयोग बुद्धिमता से करे।
- यदि आप अकेले है तो आपका कोई महत्व नहीं, परन्तु यदि आप संगठन में स्नेहशील, रमणीक व सहयोगी होकर रहते है तो आप मूल्यवान है।
- मीठा बोलने में एक कौड़ी भी खर्च नहीं होती है फिर कंजूसी क्यों ? सदा प्रेमयुक्त, मधुर व सत्यवचन बोलें।
- जब प्रगति होती है तो परिवर्तन स्वभाविक है। यदि आप परिवर्तन से डरते हैं तो उन्नति कैसे हो सकती है ?

कल्पतरु के समान है-केर

केर नाम की एक कंटीली झाड़ी राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में बहुतायत से पाई जाती है इस पर लगे छोटे छोटे बेरों के आकार के फल को ही केर कहते है। केर को वनस्पति विज्ञान में Capparis decidua कहते हैं. इसे आप चेरी ऑफ डेजर्ट भी कह सकते है। पंजाब आदि कई जगह इसे टिंट भी कहते है

यह फल कडवा होता है इसलिए इसे खाने योग्य बनाने के लिए इसे मिट्टी के एक बड़े मटके में पानी में नमक का घोल बनाकर उसमें इसे कई दिनों तक डुबोकर रखा जाता है जिससे इसका कड़वापन खत्म होकर खट्टा मीठा स्वाद हो जाता है तत्पश्चात इसे सुखाकर वर्ष पर्यन्त इस्तेमाल हेतु संग्रह कर लिया जाता है

इसका बिना सुखाये भी आचार व सब्जी बनाकर सेवन किया जा सकता है। राजस्थान में आचार बनाने के लिए यह लोगों की पहली पसंद है। आजकल बाजार में सुखा ''केर'' भी मिलता है।

केर की महिमा का बखान राजस्थानी काव्य "हठीलो राजस्थान" में इस तरह किया गया है–

सट रस भोजन सीत में,
पाचण राखै खैर ।
पान नहीं पर कल्पतरु,
किण विध भुलाँ कैर।।

(जिस फल के प्रयोग से) सर्दी के मौसम में छःरसों वाला भोजन अच्छी तरह पच जाता है। उस कैर (राजस्थान की एक विशेष झाड़ी) को किस प्रकार भुलाया जा सकता है जो कि बिना पत्तों वाले कल्पतरु के समान है।

तीन व्याहृतियाँ (भूः भुवः स्वः)

गायत्री में ऊँकार के पश्चात् ''भूः भुवः स्वः'' यह तीन व्याहृतियाँ आती हैं । इन तीनों व्याहृतियों का त्रिक् अनेकार्थ बोधक हैं, वे अनेकों भावनाओं का, अनेकों दिशाओं का संकेत करती हैं, अनेकों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं ।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन तीन उत्पादक, पोषक, संहारक शक्तियों का नाम भूः भुवः स्वः है । सत्, रज, तम, इन तीनों गुणों को भी त्रिविध गायत्री कहा गया है । भूः को ब्रह्म, भुवः को प्रकृति और स्वः को जीव भी कहा जाता है । अग्नि, वायु और सूर्य, इन प्रधान देवताओं का प्रतिनिधित्व तीन व्याहृतियाँ करती हैं । तीनों लोकों का भी इनमें संकेत है । इस प्रकार के अनेकों संकेत व्याहृतियों के त्रिक् में भरे हुए हैं

यह तीन व्याहृतियाँ जिन तीन क्षेत्रों पर प्रकाश डालती हैं वे तीनों ही अत्यन्त विचारणीय एवं ग्रहणीय हैं । ईश्वर, जीव, प्रकृति के गुंथन की गुत्थी को व्याहृतियाँ ही सुलझाती हैं । भूः लोक, भुवःलोक और स्वः लोक यद्यपि लोक विशेष भी हैं, पर अध्यात्म प्रयोजनों में ''भूः'' स्थूल शरीर के लिए, ''भुवः'' सूक्ष्म शरीर के लिए और ''स्वः'' कारण शरीर के लिए प्रयुक्त होता है । बाह्य जगत् और अन्तर्जगत् के तीनों लोकों में ऊँकार अर्थात् परमेश्वर सर्वव्याप्त है । व्याहृतियों में इसी तथ्य का प्रतिपादन है । इसमें विशाल विश्व को विराट् ब्रह्म के रूप में देखने की वही मान्यता है, जिसे भगवान् ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखाते हुए हृदयंगम कराया था । ऊँ व्याहृतियों का समन्वित शीर्ष भाग इसी अर्थ और इसी प्रकाश को प्रकट करता है ।

एक ऊँ की तीन संतान हैं–(1)भूः (2) भुवः (3) स्वः । इन व्याहृतियों से त्रिपदा गायत्री का एक–एक चरण बना है । उसके एक–एक चरण में तीन पद हैं । इस प्रकार यह त्रिगुणित सूक्ष्म परम्पराएँ चलती हैं । इनके रहस्यों को जानकार तत्वज्ञानी लोग निर्वाण के अधिकारी बनते हैं । ऊँ र्भूभुवः स्वः–इस शीर्ष भाग के पश्चात् गायत्री मंत्र प्रारंभ होता है ।

।। नवधा भक्ति ।।

1.श्रवण	:	जो मनुष्य तत्वज्ञ जीवन्मुक्त महापुरूषों से सुनकर उनासना करते है, ऐसे में वे सुनने के परायण हुए मनुष्य मृत्यु को तर जाते है।
2.कीर्त्तन	:	प्रेमपूर्वक भक्त मेरे नाम, रूप–लीला आदि का कीर्तन करते हैं।
3.स्मरण	:	जो अनन्यचित्त होकर नित्य निरन्तर मेरी उपासना व स्मरण करते है।
4.पादसेवन	:	जो भक्त प्रेमपूर्वक मुझे प्रणाम करते हुए मेरी उपासना करते है।
5.अर्चना	:	परमात्मा को अपने कर्मों द्वारा अर्चन पूजन करके सिद्ध को प्राप्त हो जाता है और फिर अन्त में मेरे ही को प्राप्त होगा।
6.वन्दन	:	हे सर्वात्मन आपको हजारों बार नमस्कार हो। आपको आगे से, पीछे से, हे परमात्मा बारम्बार नमस्कार हो। मैं आपको साष्टांग होकर प्रणाम करता हूँ। दण्डवत करता हूँ।
7.दास्य	:	तूं मेरा भक्त हो जा और कह दे कि हे कृष्ण। मैं आपका ही शिष्य हूँ, भक्त हूँ।
8.सख्य	:	तूं मेरा सखा है। हे कृष्ण, जैसे सखा अपने सखा के अपमान सह लेता है अर्थात् क्षमता कर देता है – ऐसे ही आप मेरे द्वारा किये गये अपमान को सहने में समर्थ है।
9.आत्मनिवेदन	:	मैं उस आदि पुरूष परमात्मा की ही शरण हो गया हूँ। प्रभु भी कहते हैं तू सभी धर्मो का आश्रय छोड़कर केवल मेरी शरण में आजा ''मामेकं शरणं व्रज'' मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूँगा।

दुसरों को कुछ देना सीखें

संत चिदंबर दीक्षित के पास एक निसंतान स्त्री पहुँची और निवेदन किया, ''महाराज! मेरे कोई बच्चा नहीं होता, कुछ ऐसा उपाय बताइए कि मेरी मनोकामना पूरी हो जाए।''

संत चिदंबर ने उसे मुट्ठी भर भूने हुए चने दिए और बोले, ''इन्हें खाओं बैठकर। जब मैं बुलाऊँ, तब आना, उपाय बताऊँगा।'' स्त्री ने वैसा किया। वह चने खा रही थी, तभी दो–चार बालक उधर से निकले। उन्होनें ललचाई आँखों से उसकी ओर देखा। एकाध ने चने पाने के लिए हाथ भी पसारा, पर उसने किसी को नहीं दिए। संत ने उसे पुकारा और बोले, ''मुफ्त के चनों मे से दो–चार दाने तुम बच्चों को न दे सकी तो भगवान तुम्हें बच्चे कैसे दे देते। पहले देना सीखों, बच्चें मिल जाएँगें।''आज तक कोई भी आदमी नही हुआ जिसकी सभी कामनाएं पूरी हो जाएं। इसलिए निष्काम होना जरूरी है।

रोग का मूल कारण

- प्रकृति ने हमारे शरीर को एक यंत्र की तरह बनाया है।
- इस यंत्र में पांच पुर्जे प्रमुख हैं– पृथ्वी तत्त्व, जल तत्त्व, अग्नि तत्त्व, वायु तत्त्व और आकाश तत्त्व।
- इसमें काम करने वाली पांच ज्ञानेन्द्रियाँ – आंख, कान, नाक, जीभ और
- पांच कर्मेन्दियां –हाथ, पैर, मुख, गुदा तथा लिंग हैं। इसके बाद मन, तन्मात्राएं, अहंकार आदि से पूर्ण जीवात्मा भी है।
- प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा रहती है कि उसका शरीर स्वस्थ एवं बलशाली रहे क्योंकि स्वास्थ्य के बगैर जीवन व्यर्थ है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–शारीरिक स्वास्थ्य के बिना नहीं प्राप्त हो सकता। ''नीरोग व्यक्ति रूखा–सूखा खाकर सुखी रह सकता है, परन्तु अस्वस्थ व्यक्ति के सामने छप्पन प्रकार के भोजन भी निरर्थक हैं।'' यदि हम इस बात पर विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि मिथ्या आहार–विहार ही रोगों की जड़ है। ''स्वास्थ्य का आधार वह क्रिया नहीं जो आप कभी–कभार करते हैं। परन्तु वे बातें हैं जिन्हें आप आठों प्रहर करते रहते हैं।''
- आजकल हम अपने खाने–पीने, नियम–संयम, सोने–उठने, घूमने–फिरने, व्यायाम करने आदि के बारे में बहुत कम विचार करते हैं। अनियमितता आयुर्वेद के स्वास्थ्य नियमों के प्रतिकूल है। यही अनियमितता हमें बीमार तथा अशक्त बनाती है।

एक प्रकार की ऊर्जा है–वात दोष

वात दोष गतिशील होता है, इसीलिए यह एक प्रकार की ऊर्जा है। यह सारे शरीर का कार्यपालक अधिकारी है। यह शरीर के संचार में ज्ञानेन्द्रिय से मस्तिष्क तक महत्वपूर्ण है। यह विचार को स्मृति से चेतना तक लाता है और वर्तमान अनुभवों को स्मृतियों में बदल देता है। यह बोली को सही रूप देता है और हंसी–खुशी का आधार है। मतलब यह कि कार्य करने वाली उंगलियों के पीछे भी वात की शक्ति काम करती है। आयुर्वेद के व्याख्याकार महर्षि चरक ने वात (वायु) को पांच प्रकार का बताया है–

प्राण– इसका संबंध छाती और श्वसन से है।

व्यान – इसका संबंध हृदय के कार्यो से

अधिक है।

उदान – इसका संबंध भोजन नली से है। यह उलटी तथा भोजन नली से संबंधित रोग बढ़ाता है।

समान – इसका संबंध आंतों से है। यह भोजन को पचाते तथा मल बनाने का कार्य करता है।

अपान– यह गुदा तथा मूत्र प्रणाली से संबंध रखता है। यह मल–त्याग, शुक्र निकालने तथा प्रसव को नियंत्रित करने का कार्य करता है।

इस प्रकार वायु और आकाश से बना वात प्राकृतिक रूप से हल्का और शुष्क होता है। यदि यह कुपित हो जाए तो वात संबंधी रोग पैदा हो जाते है, जैसे–घुटनों में दर्द, पेट में दर्द, लकवा, जीभ का अकड़ जाना, कूल्हे आदि में दर्द। वात न घटता है और न बढ़ता है। वह केवल असंतुलित हो जाता है। जिन दोषों को यह नियंत्रित करता है, वे बिगड़कर रोग बन जाते है। इसीलिए अधिकतर चिकित्सा इसका दोष सामान्य करने के लिए की जाती है।

जब खाल या खोपड़ी खुश्क हो जाए, प्यास जमने लगे या किसी के पैरों में बिवाइयां हो जाएं तो इसे वात दोष समझना चाहिए। रोगी के शरीर की बनावट में उम्र तथा मौसम के कारण अनेक लक्षण अपने आप प्रकट हो जाते है। कई बार रात में नींद नहीं आती है। इसका कारण अपच या पेट में गैस का प्रभाव है। पीठ में दर्द, कमर, जंघाओं या जोड़ो में दर्द वायु (वात) न सहन करने के कारण होते है। यदि हम समय पर इनकों पहचान कर घरेलू चिकित्सा का लाभ उठाना जानते हैं तो रोग से बच जाते है।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

– जब मैं ठगी का शिकार हुआ –

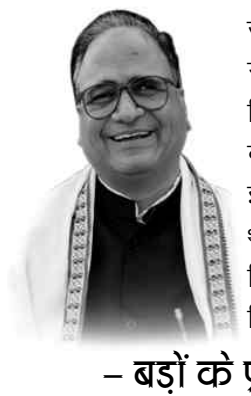

उस बच्चे का मुंह बहुत सूज गया था। बिचारे की बहुत पिटाई हुई थी, निर अपराध की। इसलिये की वो गरीब था। इसलिये वह बेचारा मजबूर था। कितना भार में अन्याय किया, कितनी फूट पड़ गई, कितने झगड़े हो गये।

– बड़ों के प्रति कृतज्ञता –

क्या कहें? एक प्रसंग तो नहीं, कई प्रसंग है। बार–बार प्रणाम नमन करता हूँ। हमारे पूज्य शंकर लाल जी अग्रवाल साहब को। जिनके सुपुत्र भाई शिवनारायण जी, श्रवण कुमार की तरह, कभी–कभी उधार की जरूरत पड़ती तो ताऊजी से 200/– रूपये ले जाता। वो गल्ले में से निकाल कर दे देते। एक बार उनके गल्ले में नहीं थे तो उन्होने कहा बैठ बेटा कैलाश! मैं अभी लेकर आता हूँ। पड़ौस की दूकान से लेकर आये 200/– रूपये मेरे को लाकर के दिये। कभी मै 2 दिन में लौटाता तो कभी 3 दिन में लौटाता। कितने सज्जन, क्या मै इनका ऋण चुका सकता हूं? कभी नहीं। क्या मै कभी शिवनारायण का ऋण चुका सकता हूँ? कभी नहीं।

इन्होने बहुत चंदा दिया। बहुत आनन्द दिया और दिलवाया। प्रिय अभिषेक जी का, आदरणीय श्वेता बहू का, बालगोपाल का मैं बड़ ऋणी हूँ। बहिन अनुराधा का। भीलवाड़ा का प्रवास, आनन्ददायी प्रवास। हमारे प्रिय भगवतीलाल जी चौबीसा साहब, राज को 11 बजे अजमेर से पुस्तके लेकर के आते थे, और 3 बजे उसी दिन वापस ट्रेन में बैठ जाते थे, पुनः अजमेर जाना....

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

चक्रवर्ती सम्राट को पुण्योपार्जन का शौक कुछ ऐसा लगा कि प्रजा से पुण्य खरीदने लगे! ऐसी तराजू बनाई गई जिसमें किसी के पुण्यों के लेखों का कागज एक पलड़े में रखते ही दूसरे पलड़े में उसके बराबर स्वर्ण मुद्राएं तुल जाती!

विधि ने अपना काम किया, पड़ौस के राजा ने आक्रमण किया, परिणाम में हार मिली–चक्रवर्ती सम्राट को! रानी, पुत्र सहित उन्हें रात्रि के अंधेरे में भागना पड़ा! पर, खाने को कुछ नहीं था– साथ! पड़ौसी राज्य में जाकर कुछ मेहनत की, जिससे एक समय की भोजन सामग्री नसीब हुई। रानी भोजन बना ही रही थी कि एक भिखारी ने दयनीय स्वरों में याचना की– भोजन की! सम्राट द्वारा याचना को विनयपूर्वक अस्वीकार करते देख रानी ने कहा– राजन् यदि एक दिन और भूखा रह जायेंगे हम तो इस भूखे का पेट भर जायेगा..... दे दीजिये इसे भोजन!

कुछ दिनों की कठिन यात्रा के बाद राजा ने अत्यन्त चिन्तित होकर रानी से कहा "अब आगे का जीवन कैसे चलेगा? रानी ने सुझाव दिया " अपने कुछ पुण्य यहाँ के नरेश को बेचकर हम कुछ स्वर्ण मुद्राए लेकर सुखी जीवन जी सकते हैं! राजा को बात अच्छी लगी! सम्राट ने वहाँ के राजा के पास अपनी बात रखी, तो वे तैयार हो गये, पर यह क्या? सम्राट ज्यों–ज्यों पुण्य का लेखा तराजू में रखते पर पलड़ा हिलता तक नहीं! सभी ओर से घेरती निराशा के बीच रानी को भिखारी को दिया भोजन याद आया, तब लेखा पर्ची पलड़े में पड़ी तो दूसरी ओर सहस्त्र स्वर्ण मुद्राएं आ गई– पलड़े में। सम्राट ने तुरन्त जान लिया कि वास्तव में पुरूषार्थ द्वारा अर्जित राशि का दान ही सार्थक है!

आदरणीय महानुभावों, आपश्री द्वारा भी जो कठोर परिश्रम द्वारा धन रूपी लक्ष्मी का दान नारायण सेवा संस्थान को दिया जा रहा है, वह ऐसा ही दान है। आप द्वारा दिए गये दान से पशुवत चलने वाले अपने पांवो पर खड़े हो रहें हैं, जिनके मां–बाप नहीं है ऐसे बच्चे सुसंस्कारी एवं विद्या दान अर्जित कर रहें हैं, बेसहारा एवं गरीब बहिनें स्वावलम्बन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है, वनवासी क्षेत्र के अभाव ग्रस्त दीन हीन बीमार औषधि प्राप्त कर रहे हैं– घर बैठे। सैकड़ों परिवार आजीवन व्यसन मुक्त होकर सभ्य एवं सुखी ग्रहस्थ जीवन जी रहें हैं।

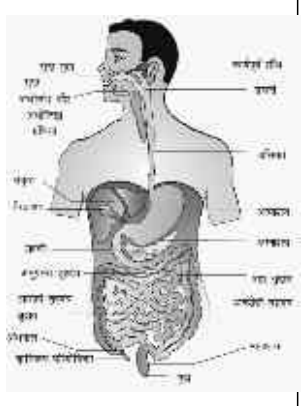

आइए, हम भी प्रण लें कि जब तक कुछ भी देने की सामर्थ्य परमात्मा बनाये रखेगा–तब तक किसी जरूरतमन्द को निराश नहीं लौटने देंगे!

मानव शरीर से जुड़े रोचक तथ्य

- जन्म के समय किसी भी मनुष्य के शरीर में 300 हड्डियां होती है जो समय के साथ जुड़ कर 206 रह जाती हैं। क्या आप जानते है कि इन हड्डियों में से 22 हड्डियां तो हमारे सिर में होती हैं।
- लीवर से जुड़ा तथ्य शायद आपको पता नहीं होगा कि हमारा लीवर हमारे शरीर के भीतर का सबसे बड़ा अंग है जबकि हमारी खाल शरीर का सबसे बड़ा हिस्सा। जिस पर करीब 64 लाख संवेदनशील तंतु होते हैं।
- मानव जब जाग रहा होता है तब उसका मस्तिष्क 10 से 23 वॉट तक विद्युत ऊर्जा को प्रवाहित करता है, जो एक बल्ब को भी चलाने के लिए काफी है।
- मानव का हृदय बहुत शक्तिशाली होता है, यह बहुत ही तेज दबाव से ब्लड का पंप करता है। यह इतनी तेजी से ब्लड को पंप करता है कि अगर दिल को शरीर के बाहर ब्लड करना करना पड़े तो यह ब्लड को 30 मीटर ऊपर तक उछल सकता है।
- 24 घंटों में हमारा दिल करीब 1 लाख बार धड़कता है, जो पूरे जीवन में करीब 30 करोड़ का आंकड़ा पार करते हुए 400 मिलियन लीटर खून पंप कर शरीर को गतिमान बनाए रखता है।

प्रभु की भक्ति ही असली दौलत

संत रविदास जूते बनाने का काम करते थे। वे संत – महात्माओं का बड़ा आदर और सेवा – सत्कार किया करते थे। एक बार उन्होंने एक संत की बड़ी सेवा की। संत उनसे बहुत खुश हुए। जब वे जाने जगे तो उन्होंने रविदास जी से कहा – "मैं तुम्हारी सेवा से बहुत बहुत प्रसन्न हूं। इसलिए मैं तुम्हे पारस पत्थर देता हूं। इससे जो भी लोहा लगेगा, वह सोना बन जायेगा।" यह कहकर उन्होंने पारस पत्थर लिया और जिस लोहे की सुई से रविदास जी जूते गांठते थे, उसे छू दिया तो वह भी सोना बन गयी।

यह देख रविदास जी ने कहा – "अब मैं जूते किससे बनाऊंगा ?"

संत ने कहा – "अब तुम्हें जूते बनाने की क्या जरूरत है, इस पारस पत्थर को किसी भी लोहे पर लगा देना, वह सोना बन जाएगा।"

रविदास जी ने पारस पत्थर लेने से मना कर दिया। संत के काफी जोर देने पर भी जब रविदास जी ने वह पारस पत्थर नहीं लिया तो उन्होंने उसे उनकी झोपड़ी के छप्पर पर रख दिया। साथ की कहा कि आप इससे मंदिर बनवाओ या जो चाहे करो। मैं आपसे बहुत खुश हूं, इसलिए मैं यह आपको देकर जा रहा हूं।

धीरे – धीरे एक साल गुजर गया। एक दिन वह संत फिर उस रास्ते से गुजरे और रविदास जी की कुटिया पर जा पहुंचे। तब संत ने कहा – "तुम अभी तक इस कुटिया में ही बैठे हो ? मैं तो तुम्हें पारस – पत्थर देकर गया था। मैंने सोचा कि अब यहां तो बहुत बड़ा मंदिर होगा और यहां पर बहुत सारे लोग आते – जाते होंगे, लेकिन तुम तो अब भी जूते ही बना रहे हो।"

संत की बात सुनकर रविदास जी बोले – "अगर मैं उस पारस पत्थर का इस्तेमाल करता रहता तो जो समय मुझे अंदर दौलत पाने के लिए मिला था, वह निकल जाता। वह पत्थर छप्पर पर आप जहां रखकर गए थे, वहीं – का – वहीं पड़ा हैं।"

महापुरूष, जिन्हें अंदर की दौलत मिली होती है, उनका नजरिया अलग होता है। उनकी यह तमन्ना है कि वे हर समय उस दौलत के साथ जुड़े रहे। अंदर की दौलत हमें सदा – सदा का सुख – चैन देती है। अंदर की दौलत हे। अंदर की दौलत हमें सदा – सदा का सुख – चैन देती है। अंदर की दौलत हीरे – जवाहरातों में नहीं, सोने – चांदी में नहीं, बल्कि अपने आपको जानने में है। हममें से हर एक प्रभु का अंश है। अगर हमने इसका अनुभव कर लिया तो फिर हमें हर समय प्रभु का सहारा दिखाई देगा। जिसने प्रभु के सहारे का अनुभव किया, उसकी जिंदगी सुख – चैन से भरपूर हो जाती है। प्रभु के भक्ति ही असली भक्ति हैं।

यहाँ नहीं लगते ताले, शनि देव हैं रखवाले

करोड़पति से लेकर आम आदमी तक अपने रूपये पैसों को चारों से बचाने के लिए तिजोरी और आलमारी में ताले लगाते हैं। इतना ही नहीं ताला लगाने के बाद उसे खींचकर तसल्ली कर लेते हैं कि ताला अच्छी तरह से लग गा है या नहीं।

लेकिन हमारे देश में ही एक ऐसा बैंक है जहां कभी ताला नहीं लगता है। बैंक का मानना है कि इनके बैंक की सुरक्षा स्वयं शनिदेव करते हैं औंर जिसके शनि हों रक्षक उसे फिर चोर और लुटेरों से डरने की क्या जरूरत हैं। इस बैंक का नाम है यूनाइटेड कमर्शियल बैंक। यह दुनिया का पहला ऐसा बैंक हो सकता है जहां कभी ताला नहीं लगाया जाता है।

यह बैंक महाराष्ट्र के शिंगणापुर में स्थित है। शिंगणापुर को शनिधाम के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि जिस प्रकार महाकालेश्वर उज्जैन के राजा हैं उसी प्रकार शनिदेव शिंगणापुर शासक हैं। शिंगणापुर गांव में लगभग तीन हजार की आबादी है। इस गांव में रहने वाले धनवान लोग भी अपने घरों में ताला नहीं लगाते हैं। इन्हें घर से कीमती सामान चोरी होने का डर नहीं है। आपको जानकर ताज्जुब होगा कि इस गांव में लोग पेटी, बक्सा, या अटैची में बंद रख देते हैं।

यहां के लोगों का मानना है कि किसी ने इस गांव में काले रंग का एक विग्रह है जिसे शनिदेव माना जाता हैं। आठ जून को शनिदेव का जन्मदिवस मना है। इस दिन यहां करोड़ों भक्त पहुँचे और शनिदेव के विग्रह पूजा और दर्शन का लाभ प्राप्त किए। यहां आलम ये है कि बाहर से आने वाले भक्त भी अपने वाहनों में ताला नहीं लगते हैं क्योंकि शनिदेव को बंधन पसंद नहीं है।

शनिदेव के विग्रह के पास एक नीम का पेड़ है। जब भी इसकी शाखा विग्रह पर छाया करने लगती है तब किसी न किसी कारण से छाया करने वाली शाखा सूख अथवा टूटकर गिर जाती है। यहां शनिदेव खुले आसमान में विराजते हैं। मंदिर की चारदीवारी में रहना पसंद नहीं है। जिस किसी ने इनका मंदिर बनाने अथवा छाया हेतु छत्र चढ़ाने का प्रयास किया उसे शनि के कोप का सामना करना पड़ा।

दो माह बाद निराश्रित वृद्ध फिर लगा चलने

दुर्घटना में घुटनों के नीचे दोनों पांव की टूटी थी हड्डियां

उदयपुर। करीब 2 माह पूर्व सड़क दुर्घटना में घुटनों से नीचे दोनों पांव की हड्डियां टुटने से गम्भीर रूप से जख्मी मोहन सिंह (55) नारायण सेवा संस्थान में दो माह रहने के बाद पुनः सकुशल खेरवाड़ा पहुंच गए। डिस्चार्ज होते समय संस्थान संस्थपक से मिलते समय उनकी आंखे नम हो उठी।

संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि मुलतः पंजाब के लगरोवा –नवां शहर निवासी मोहन सिंह पिछले 35 वर्ष से खेरवाड़ा की एक होटल में काम करते हुए अकेले जीवन बसर कर रहे थे। 2 माह पूर्व इन्हें दुर्घटनाग्रस्त हालत में जोगिन्दर सिंह ने लावारिस पड़ा देखा था और वे इसे संस्थान में लेकर आए थे। जिन्हें बाद में आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज में दाखिल करवाया गया। मोहन के दोनों पांवों की हड्डियां टुटी हुई थी, जिनमें रॉड डालकर ऑपरेशन किया गया। इलाज के बाद डेढ़ माह संस्थान में रहते हुए अब वे वॉकर के सहारे पुनः चलते–फिरते है। संस्थान की एम्बुलेन्स से उन्हें साधक पर्वत सिंह सौलंकी व शान्तिलाल मेघवाल खेरवाड़ा छोड़कर आए। मोहन सिंह को आवश्यक दवा, ऊनी वस्त्र व अन्य सामग्री के साथ विदा किया गया।

न करें -चुगली

चुगली करने वाले को किसी की कमजोरियो को जगजाहिर करने में गर्व का अहसास होता है, दूसरों की छिछालेदारी में आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है लेकिन ये क्षणिक सुख, गर्व और आनंद चुगली करने वाले को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा करते है कि वह सबके लिए अविश्वास का पात्र बन जाता है। सब उससे बचने, कन्नी काटकर चलना चाहते है। देखते ही देखते वह अलोकप्रियता के गर्त में डूब जाता है। चुगली करने की आदत एक ऐसी लत है जो आसानी से पिंड नहीं छोड़ती। अतः अच्छा यही है कि इस समस्या से शुरू से ही बचें। किसी की बात इधर से उधर करने से पहले जरा सोचे कि यदि कोई आपके बारे में ऐसा करें तो कैसा लगेगा? किसी की कमजोर नस पर हाथ रखने से पूर्व अपनी भी कमजोरियों और उनके सार्वजनिक होने से पहुंचने वाली पीड़ा का अहसास कर लें तो शायद चुगली करने की वजह से दूसरों को पहुंची पीड़ा की अनुभूति हो सके। आपकी एक चुगली किसी का घर तोड़ सकती है, किसी की सामाजिक प्रतिष्ठा को दाग लगा सकती है, किसी के लिए अपमान का कारण बन सकती है।

सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
है विनती यही पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
चाहे संकट ने मुझको घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
यह चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे बैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
कांटो पर मुझको चलना हो, चाहे अग्नि मे भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, यहीं काम मेरा सुबह शाम रहे।
बस ज्ञान तेरा भगवान रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294-6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com